

ॐ नमो देवसहजनिज ॥ तुंचतुर्भुजश्रुष्ट  
 तुंचतुर्भुजश्रुष्ट ॥ त्वाविश्वभुज ॥ गुरुत्वं तुजगजगौरव ॥ १ ॥ नि  
 जशिष्यादिशाभावाय ॥ तुंगुरुनावेन्द्रभयदाता ॥ श्रभय  
 देवनितत्व ॥ भयवेथानिवासीसि ॥ २ ॥ निवारुनिजन्ममरण  
 ॥ नशसांचभेदसिन्नापण ॥ तेष्वागुरुसीषुनामिसंपूर्ण ॥  
 त्वत्त्वैव ॥ आभासे ॥ ३ ॥ तेयेकपणपाहातादृष्टि ॥ येका  
 ॥ ४ ॥ गुरुत्वं कौं देसकळसृष्टी ॥ स्वानंदपु  
 ॥ ५ ॥ नास्वसंदेकचिघ्न ॥ जगद्गुरुजनार्द  
 यो जसा ॥ येत्वेकपणेंदृढकेले ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ ॥

जेथेंखुटले ॥ ज्ञानापण ॥ येथेंखुटले  
 ॥ १ ॥ यापरियेकायेकीयेक  
 तोयेकादशचामथीतार्थ  
 त्यायेकत्वाचिनिज  
 दृढानुतापविरक्ति ॥ भग  
 ॥ ७ ॥ हेसत्ताविसावाश्रध्याईआपण ॥ स्व  
 सत्संगेंभगवतज्ञजन ॥ तेणेंवैराग्य  
 नकरीताभगवद्वक्ति ॥ कदांनुपजेवि  
 नकेकल्यांतिसाधका ॥ १० ॥

॥१०॥ ऐसे बे... श्री कृष्ण ते उधुवे जि विध रु नि पूर्ण ॥ भग  
वत्स भक्ति... वेधान ॥ क्रिया योग जाण पु स तु ॥११॥ श्लोक ॥  
उधु व उ वा च ॥ क्रिया योगं समा च क्ष भ द द रा ध नं प्र भो ॥ य स्मा  
त्वा ये य था चं ति स त्व ता सा त्व त र्ष भ ॥१॥ टी का ॥ निज भक्ति  
श्र... र्थ तुं स त्व मु ति श्री अ नं ता ॥ तु शे निज भ क्त जे सा  
दु ज पु जि त के ए वे धि १२ ॥ ते सा धु चे आ रा ध न ॥

॥ श्री सा योग ॥ जपे न ॥ कृ पा क रु नि आ प ण ॥ म ज संपू  
सा गा र्थे १२ ॥ ए त नु जे या ए का सि पु सा वे ॥ हे मा शे नि  
के सर्व... ॥ हे ला ज हि जि वे ॥ २ ॥

गुरु वे... ॥ तु शे नि प्र भु त्वे गौ र वे ॥  
श्लोक... ॥१५॥ तुं क पा लु  
उ... ॥ कृ पे ने... ॥ कृ चा भ क्त ॥ या तु मिं च र णं किं त  
॥ स... नि शु धा र्थ सा र्थ पु से ॥१६॥ इ तु का क रु नि आ त्या  
द रु... पु स सि पु जा प्र का रु ॥ ह्य श्रे ष्ठ श्रे ष्ठि के ला वि चा  
रु ॥ तो नि ज नि श्रु त्वा व ध री १७ ॥ श्लोक ॥ ए त द्द दं ति मु  
न यो मु हु निः श्रे ष्ठ सं नृ ण ॥ ना र दो भ ग वा न्वा स आ चा र्यो  
गि र सः स... ॥ टी का ॥ पु र्वि वे द वि चा र नि ष ॥ सु र व र्य मु  
नि श्रे ष्ठ ॥ ए... गु दा द ले प ष ॥ आ ति व रि ष वि वे की १८

पुजाविधानवरिष्ठ ॥ दोलिलारेव रुषी नारद ॥ आंगिराचा पुत्र ॥  
 माधुदेवगुरु ॥ तुसहं चिबोले ॥ १९ ॥ जो व्यास सत्यवति सु  
 तु ॥ जो कां नार ॥ एण मुर्तिमंतु ॥ जे ए प्रकट के ला वेदाथु ॥ जो विख्या  
 त माहाकवि ॥ २० ॥ पुराण कवी कर्ता तो सांग ॥ यालागी व्यासो  
 विष्ट सिद्ध जग ॥ ते एंही भगवंत पुजामार्ग ॥ हा क्रिया योग  
 को ॥ २१ ॥ असो इतरा चिचावठी ॥ जो पितामह सकळ स  
 ष्टि ॥ जो जन्मला विष्ट व्यापोठी ॥ ते एंही या गोष्टि दृढ के ल्या  
 ॥ श्लोक ॥ निःस्पृहं स्वामी भोजाद्यदाह भगवानजः ॥ पुत्रे  
 वा भगुमु ॥ २२ ॥ एतन्माहात्म्यवः ॥ २ ॥ टीका ॥ तुंवाक ॥ ३ ॥

त्या विये आदी ॥ हचि पुजाविधानविधि ॥ उपदेसिला पुत्र  
 ॥ स्वयं त्रिसुधी विधाता ॥ २३ ॥ ते एंही क त्यादि आपण  
 आभीक आळासनिवेसोन ॥ भगु के रूप पादि पुत्रासि जाण  
 गहि पुजाविधान उपदेसि ॥ २४ ॥ श्री माहादेवेंही आपण ॥ हे  
 क्रिया योग विधान ॥ भावें भवानी सजाण ॥ केले निरोपण  
 ये कांकी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ एतद्विसर्ववर्णनामाश्रमाणां च सं  
 मतं ॥ श्रेयसा मुत्तमं मन्ये स्त्री ॥ रूद्राणं च मानद ॥ ४ ॥ टीका ॥  
 ये वं हे श्रेष्ठ पंपरा ॥ तुंवा प्रगट केले दातार ॥ दिनदयाळु तुं  
 स्वरा ॥ आह ॥ दि ॥ रा ॥ वधारी ॥ २६ ॥ आश्रम धर्म विधि वि  
 धान ॥ तेथे आधि ॥ करी द्विज जन्मे जन ॥ त्यासि कर्म बाधा वा

॥४॥

धीगहन गुंतले ब्रह्मण कर्महले ॥१७॥ तैसें नकेतु शेंभ  
 जन भजनाधिकारी चारी वर्ण दीनो धारी भजन पुर्ण ॥  
 स्त्रिया शुद्र जन उधरिले ॥१८॥ कर्मि गुंतले उत्तमोत्तम ॥ भ  
 जन उधरीले श्राधमो धम भजन सर्वासि सुगम ॥ भज  
 न स्वधर्म सार्थक ॥१९॥ भजन महिमानि श्राम ॥ श्राधमा  
 पर कर्तमोत्तम ॥ भजन ही एजे उत्तम ॥ ते श्राधमो ध  
 य स्वयं होति ॥२०॥ सर्ववर्ण श्राणी श्राश्रम भगवत् भ  
 नं श्राति उत्तम ॥ कर्मि च निजवर्म भक्त निःकाम जा  
 ति ॥२१॥ कर्म नियम भगवत् भक्ति ॥ स्वयं भगवत् दृष्ट हो  
 त या लागी भजना तें ही पति ॥ श्राति प्रीति मानिसि ॥३३

॥४॥

तु शेंभजन पुज म करी तां तुंति जजला चाहो सित्राता ॥ तु  
 भक्ता सि समान दाता ॥ तें पूजा पुजन मज सांग ॥३३॥ श्रा  
 ॥ एतक मल पत्रा श्कर्म बंध विमोचनं ॥ भक्ता यचानुर  
 क्त म ल हि विश्वेश्वर श्वर ॥ ५ टीका ॥ कमल ना भिनारायण  
 ॥ विश्रामक मल नयना ॥ कमला लया कमल वदना  
 ॥ विनति श्री कृष्ण श्रा वधारी ॥३४॥ तुं वा पाहिल्या कृपा द  
 ष्टी ॥ ताकाळ पै उठा उठी ॥ सुदतिकर्म बंधना च्या गांठी ॥  
 स्नानंद पुष्टि निज भक्तां ॥३५॥ जे विंशता चें कठिण पण  
 ॥ क्षणें विरवि सु र्ग कीरण ॥ ते विं कर्म बंध निदळन ॥ तु शे

॥५॥

कृपावलोकनकरी कृष्णा ॥ ३६ ॥ कांसेंधवाचामाहाणारि ॥ जेवा  
 वीरेसिंधुमाशार ॥ तेविकर्मबंधनाचिबोरुहुरि ॥ तुशीकृपाकरी  
 श्रीकृष्णा ॥ ३७ ॥ तुशीजालीयाकृपादष्टि ॥ कर्माकर्मोपडेतुठी  
 ॥ जेविसुर्योदयापाठी ॥ नातुडेभेटीखद्योतां ॥ ३८ ॥ तमादा  
 टाणियद्योतकोठी ॥ तेवित्रा ज्ञानकर्माचित्राटात्राटि ॥ तु  
 शीकृष्णासुर्येजोडव्यापाठी ॥ जातिबापुडिविरोनि ॥ ३९ ॥  
 सुशियामिः कर्मकृपायुक्त ॥ तुसेनांदतनिजभक्त ॥ जे  
 कांविषद्वारातिविरक्त ॥ तत्रानुरक्तहरीचर ॥ ५ ॥

॥ ४० ॥ तेपुण्ड्रके वंशायतन ॥ तसेभजनपुजाविधान ॥  
 मजसाग ॥ ४१ ॥ तदीनपैतुसें ॥ ४२ ॥ लए  
 ॥ तरीमीतुजशरणआलोपा  
 ॥ उपेक्षानाहीश्रीकृष्णा ॥  
 ४३ ॥ तुवांपरु ॥ थरीलेगजेद्रासि ॥ गणीकेतारीलेकुंठ  
 णीसि ॥ तेचिकृपाकरीआलासि ॥ रुषीकेसिकृपावु  
 ता ॥ ४४ ॥ ॥ गसिब्र ॥ लारिल्ल ॥ सतांस्टष्टि ॥ मजपुसा  
 थयाचिश्र ॥ ४५ ॥ ॥ कैसेनिपांवाठलीपोटा ॥ ऐ

॥६॥

कतेगोष्टिसांगे ॥५४॥ ब्रह्माजगाचाकर्ताहोये ॥ तोहिवि  
 सरला निजात्मताये ॥ तोतुद्र्यापोटाये उनिपाहे ॥ निजज्ञा  
 नलाहेतुसेना ॥ ५५ ॥ सवपायवणिंवाहेमाथां ॥ तुसेनाम  
 सदाजपता ॥ तुसेकपेस्तवतत्वता ॥ तोहीनिजात्मतापा  
 वता ॥ ५६ ॥ यालागीतुर्दश्वराचाईश्वरु ॥ नियंत्यांनियंता  
 स ॥ लीक ॥ विश्वं विश्वविश्वंभक्त ॥ विश्वेश्वरु श्रीकृष्णा  
 ॥ यापरि ॥ पुणबोधाचा उदधी जेणे  
 येनिजात्म ॥ विधि मजसांग ॥ ५८ ॥ ऐसा  
 ॥ कवचनेसांगुला ॥ पुढीतबोधेद्रवला ॥ निजा ॥ ६॥

कायबो ॥ श्रीकृष्ण ॥ ५९ ॥ श्लोक

तो ॥ ५९ ॥ तपारस्यकर्मकांडस्यचो  
 ॥ ६० ॥ यथावदनुपूर्वशः ॥ ६१ ॥ टाका  
 ॥ वेदवादापडिलेंमौन्या ॥ ज्याचिकरी  
 ॥ वण ॥ जपणमनस्वयेमुके ॥ ५९ ॥ जेवेदार्थप्रका  
 शक ॥ तोत्रकाचाही आदिआर्क ॥ तोउधवासियदु  
 नायक ॥ ५९ ॥ आगामिनिगमोक्तप्र  
 कार ॥ मज्ञा ॥ विधिसविस्तर ॥ सांगतांभ्र नंतपार  
 ॥ नकळेंपार ॥ ५९ ॥ उधवाऐकपांतत्वता ॥

निदेवाधिदेवे जज्ञो वक्ता ॥ तरीपुजा विधानकथा ॥ समुच्च  
 सर्वधानसांगते ॥ ३ ॥ जरीजा लेत्र तिसज्ञान ॥ तरीपुजावि  
 धिविधान सांगावथासमर्थपण ॥ सर्वथाजाएनबोलवे ॥  
 ५४ ॥ येवंपुर्वोक्तविद्या ॥ आगमनिगमनिजसार ॥ निवडोनि सं  
 क्षपाकार ॥ तु जमिसाचारसांगेन ॥ ५५ ॥ पुजाविधिनिजसा  
 र ॥ निपका ॥ एकत्याचाहीवीचार ॥ वीधिउपचा  
 र ॥ वेदिकस्तांत्रिकोमिश्रइतिमेत्रि  
 तेनैवविधिनामांसमर्चयेत्  
 त्रैवेद्यांश्रंग ॥ वेदोक्तमाश्रीपुजा ॥ ७ ॥

श्रंग ॥ यानाचवेद्ये ॥ आगमप्रयोगतोएका ॥ ५७ ॥ श्रंग  
 मंगवतुव ॥ आगमोक्तपुजासांग ॥ यानाव  
 गांनिदिमां ॥ आगमप्रयोगतोएका ॥ ५८ ॥ वेदाचेमंत्रतां  
 त्रैवेद्यंश्रंग ॥ येवमिश्र ॥ तउभेयेभाग ॥ माश्रीपुजानिपजेसां  
 ग ॥ मिश्रमाश्रियानाव ॥ ५९ ॥ हेत्रिविधविधीपुजासांग ॥  
 तोजाएमाश्रात्रिविधयाग ॥ येणेमिशंतोषेश्रंग ॥ पारस्व  
 देसिचांगसपरीवारें ॥ ६० ॥ ऐसेमाश्रेत्रीविधभजन ॥ जेथे  
 ज्याविश्रधापु ॥ त्याविधीकरीतापुजन ॥ मजहृत्तिस  
 मानभावार्थ ॥ ६१ ॥ नावार्थेजोसेपुजन ॥ तेणेमिसंरूप

जनार्दन ॥ हा आगमोक्तयज्ञसंपूर्ण ॥ त्रिविधलक्षणसमसाम्ये ६२  
 ॥ वेदीकादी त्रिविधगते ॥ पुजीतं मी नृत्तश्रीपति ॥ पुजा आधिकार  
 ची स्थिति ऐकतु जत्र निस्संगं ॥ ६३ ॥ श्लोक ॥ यदास्वनिगमे नोक्तं  
 विजलं प्राप्य रूषः ॥ अथायत्ततमांभक्त्या श्रद्धया तं निबोध मे ॥ ७ ॥  
 टीका ॥ विजने जेति नू वण त्याचे आधिकार लक्षण ॥ गर्भमि  
 उपनयन ते आधिक पुण ब्राह्मण ॥ ६४ ॥ क्षत्रियाचा आधिकार  
 मुख्यासवषा व्रतबंध सोळा वर्षा प्रसिद्ध ॥ व्रतबंध वैश्यासि ॥  
 गाश्चि उपदेशादे ॥ सुभरे जन्म उपनयन यानावसावित्रि  
 मजा ए दीनने वण ॥ ६५ ॥ वेदोक्त आधिकार लक्षण ॥  
 तानाव उध यजण ॥ आतां मास्ति पुजा विधि स्थान ॥ ऐक संपूर्ण ॥ ७ ॥

निजभक्ता ॥ ६७ ॥ लोक गार्त्तियां स्वदि ॥ वाग्नौ सूर्ये सुहृदि वा दिजे ॥  
 ज्येष्ठभक्ति ॥ ६८ ॥ स्व ॥ मयया ॥ टीका ॥ माझे पुजेचे  
 स्थान ॥ ६९ ॥ कि ॥ त्याचे हि निजलक्षण ॥ उण खु  
 गुण ॥ ७० ॥ पुजा स्थान हे माझे प्रथम आधि  
 न का दृष्टीत ली स्थंडिली जाण पुजा स्थान दुसरे ॥ ७१ ॥ आ  
 गिचे ते जस्वरूप माझे ॥ ते पुजा स्थान जाण तिजे ॥ सूर्ये मंडळ  
 जे पुजा कीजे ॥ चौथे माझे पुजा स्थान ॥ ७२ ॥ उदकी माझे जे  
 पुजन ते पाचवे पुजा स्थान ॥ हृदई माझे आवाहन ॥ ति पु  
 जा स्थान साहावे ॥ ७३ ॥ शालाग्राम केवळ आचेतन ॥

॥८॥

ब्राह्मणमाश्रेत्स्वरूपचेतन॥ तेऽखंडत्वे ब्रह्मपुर्णपुजासन्मा  
 तेषुऽशेषव्यारे ७२ ब्राह्मणियावा ब्रह्मभावो ॥ तोपरमभाष्या  
 चास्वमेवो ब्रह्मादीकां पुज्यपाहवो मिदेवाधीदेवोस्वयेवंदी ७३  
 सकळपुजेनाशीज ७४ मुख्यत्वेपूज्यब्राह्मण ॥ तेसातवेपुजास्था  
 न उधवाजाणश्रुतिश्रेष्ठ ७४ सकळपुजापुज्यत्वेपुजा ॥ जोवरी  
 त्वोजा ॥ जोनवेढीतांश्रात्माभाशा ॥ वंद्यगुरुराजासर्वा  
 ७५ ज्याडे मद्रावेधरीतांदरए ॥ मिसुस्तावेब्रह्मपुर्ण ॥ ज्या  
 मद्रूपंकीतास्तवन ॥ मिपरमात्माजाणउल्लासे ७६ सद्रु  
 तेनापसरए ॥ निदकाभवेभयदारुए ॥ निवारीजन्ममरए  
 ७७ निवावेपुर्णनिजवे ॥ ७७ तोमिपरमात्मानारायण गु ॥ ९॥

७८ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सोडोनि लोक रंजनायापार। त्यजो निदांभीक उपचार। दवडु  
 निठकलाचावेकार भजनतत्परसद्भावे ॥८४॥ हे श्रुष्टो महापुजा  
 स्थान येथे श्रुमाईक जेजे भजन। तेते श्रुतिगोडपुजन उधवा  
 जाणनिश्चीत ॥८५॥ येथे निःकपट जेजे सेवा। ते श्रुतिवद्वेभदेवा  
 धिदेवा श्रुतापुजाविधी उधवा। एक बरवासांगेन ॥८६॥ श्रु  
 क पर्वस्तान प्रकुर्वी तद्योतदतोगशुद्धये ॥ उभयैरपि च स्नानं  
 मृदुद्रुणदिभिः १० टीका। मन्त्रत्यागदंतधावन यथाका  
 करुण जाण देहाशुद्धयर्थक रावे स्नान मृत्तिकाग्रह  
 पूर्वक ॥८७॥ ऐसे जा किय मन्त्र स्नान मगक रावे मंत्र स्ना  
 न विधिक तं नि क विधान दोह प्रहृणयथाविधी ॥८८॥ जै ॥१०॥

संघातः तैसा नानाप्रच्यो त्याविधी स्नानक  
 श्लोक संघोपास्त्यादिक  
 टीका वणश्रिम निजनी लीसी वेदे संध्या बोल  
 श्लोमि तेते वणश्रमी संध्या तैसि नित्य नैमित्तिक करावी ॥  
 वेदोक्त आचरांवे स्वकर्म निःशेष त्यागावं निषिधकाम ॥ या  
 नावशुध स्वधर्म न्नमो तामत्र धिके री ॥८९॥ वेदोक्त सांडने  
 स्वधर्म हाचि मुर खें श्रुति धर्म हा त श्रुतिया परब्रह्म न  
 त्यागीताकर्म स्व गहे ॥९०॥ स्वये स्वधर्म जो सांडणे तेचि श्रु  
 धर्माचे मुख्य गहे स्वधर्मे चि नित्त शुद्धी साधन या लागी



अथिचेनिदोपण विप्रदश्रीकृष्णसांगतु ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ चलाचले  
 विधिविधाप्रतिष्ठाजीवमदिरं उद्धसावाहनेनस्तःस्थिरा  
 यामुध्वार्चने ॥ १३ ॥ टीका ॥ अचेतनाचेतीनप्रकार ॥ जडाते  
 जीवविचार ॥ जिवशब्देचीमात्र ॥ मुखपरमेश्वरबोलाजे ॥ ५ ॥  
 भक्तभावार्थसाचार ॥ त्याजीवानेमंदिर ॥ प्रतिमास्थावैरेजंग  
 मी ॥ आगमशास्त्रसंमते ॥ ६ ॥ तेथेस्थावरमुर्त्तिपुजन ॥ साधके  
 नलग्नावाहनविसर्जन ॥ तेथेआधीष्ठान  
 ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ अस्मिन्साधितः स्यात्स्वच्छित्तितुभवे  
 ॥ १४ ॥ टीका ॥ जंग ॥ १२ ॥

अग्निमार्गेंसर्ग ॥ गेएवाहनविस् ॥ नपाही ॥ येकीआहेयेकीना  
 कर्तारविभाग ॥ ८ ॥ आलिगामुर्त्तिसजाण ॥ स्वयंभमासे  
 ॥ ९ ॥ तेथेआवाहनविसर्जन ॥ सर्वथाजाणलागेना ॥ १० ॥  
 कटका ॥ ज्याचेपुजे ॥ असेफुटका ॥ तेथेपरमा  
 ॥ सर्वदादेखानांदत ॥ ११ ॥ इतरमुर्त्तिजंगमाजा  
 ॥ तेथेआवाहनविसर्जन ॥ साक्षेपेकरावेआपण ॥ हेविधि  
 विधानआगमोक्त ॥ ११ ॥ स्वच्छित्तिसुर्त्तिआवाहन ॥ सवेचि  
 पूजातिविसर्जन ॥ हेउभयभाववीधान ॥ स्वच्छित्तिलाजाण ॥  
 ॥ मुर्त्तीमाजीकीजेअ



२३॥ भक्तनिःकामबाडेकोडे तैपुजाद्रवाचेसाकडे ॥ सर्वथाकाहीन  
 पडे ॥ भक्तभावोआवडे भगवंता २४ तेथेअनयासेजेप्राप्त ॥ तेऐंभ  
 गवंतलेयत्र ॥ तेचिपुजायागयथोक्त ॥ जाणनिश्चितउधवा ॥ २५ ॥  
 निःकामवृत्तिफलमुख दुर्वाकुरकानिर्मलजळ ॥ इतकेनपुजा  
 यागसकळ ॥ होयसविकळमद्रावे ॥ २६ ॥ जेथेमासासद्रा  
 दूढ ॥ तेऐंउपचाराचाकोणपाड ॥ भक्तभावोचिमजगोड ॥  
 इरवाडमद्रका २ ॥ बाहुउपचारजेकाही ॥ तेप्रति  
 जासपाह ॥ मानसपुजेचियाठार्ड ॥ वाणिनाहीउपचारा  
 ॥ तेथेमनन होयमाझीमुर्ति ॥ मनोमयउपचारसंपति ॥ १४ ॥

॥ लेनिजेमद्र ॥ २७ ॥ प्रतिमा  
 पुजास्थान यथोक्तपुजेचेविधान तुजमीसांगेन सावधा  
 उधवा ॥ श्लोक ॥ स्नानालंकरणप्रेष्टमचयामिवतूधव ॥ स्छंडि  
 लविनासंवत्सवाज्यजुतहवि ॥ १६ ॥ टीका ॥ प्रतिमामुर्तिपुजा  
 स्नान ॥ तेमुर्तिजेमहास्नपन ॥ यानावत्रोलीजेस्नान ॥ सांगभूषण  
 गुगुटादि ॥ ३१ ॥ जेलोकि कउत्तमप्रकार ॥ कांआपणसिजेप्रीयक  
 र ॥ जेअनर्घ्यअलंकार ॥ तेऐंअधेश्रीधरपुजावा ॥ ३२ ॥ स्नानभो  
 जनअलंकार ॥ सांगपुजासपरीकर ॥ हाप्रतिमापुजाप्रकार ॥ ऐक  
 विचारस्छंडीलाचा ॥ ३३ ॥ स्छंडिलीजेपुजास्थान ॥ तेथेतत्वा  
 वेधरुनिध्यान ॥ कशावेतत्वविन्यासलेखन ॥ पुजाविधानयाहे

शां३

॥१५॥

तु ॥ ३३ ॥ आत्मतत्त्वादि तत्त्व वंचना ॥ हृदई विंचुनिमात्र ॥ हृदई सिरसि स्वाक  
 वच ॥ नेत्र आस्तादिसंबनिपुजा ॥ ३५ ॥ अग्निचे ठाई जे पुजन ॥ तेथें मा  
 शेकरुनिधान ॥ आजेणु तलु विहवन ॥ हेपुजाविधान अग्निचे ॥  
 ३६ ॥ आग्नी देवाचे वदन ॥ येणें दिग्वासे संपूर्ण ॥ हविद्रव्य करीतां हवन  
 ॥ आग्नीपुजनया हेतु ॥ ३७ ॥ श्लोक सूर्याचा ठाई प्रकाशमान ॥ मं  
 कासासुर्यनारायण ॥ तेथें सौर्य वंने उपस्थान ॥ पुजाविधान  
 हेतु ॥ ३८ ॥ विचारितां श्रुतिचा अर्थ ॥ आपो नारायण साक्षात्  
 त्रेपुजाविधान यथाक्त ॥ जळी जळयुक्त तर्पण ॥ ३९ ॥ हृदई जे  
 ज्ञेयपुजास्थान ॥ तेथें मनोमनाचे अर्चन ॥ मनोमर्द मुर्तिसंपूर्ण  
 पुजाविधान मानासेक ॥ ४० ॥ माझे मुखले अर्धिष्ठान ॥ ब्रह्म

॥१५॥

४१ ॥ तथे ज्योतीपुजाविधान ॥ आज्ञापालण दाशुत्वे ॥  
 तेज्याचे ॥ अक्षयणी ॥ ते सद्गुरु माझे पुजास्थान ॥ सर्वा  
 ४२ ॥ तथीलपुत्रवर्तणेका ॥ ४२ ॥ जिवें सर्वस्वे आपण ॥ त्यासि  
 ४३ ॥ त्रावे अनन्यशरण ॥ राक्षे वचनासि प्राण ॥ निश्चियें जाणविकावा  
 ४४ ॥ गुरुचिनिज सेवासेवन ॥ आवटी करावि आपण ॥ हेवितेथि  
 ४५ ॥ पुजाविधान ॥ येणें सुखसंपन्न साधका ॥ ४५ ॥ सद्गुरुसेवा करी  
 ४६ ॥ तपाही ॥ ब्रह्मसायुज्यलागेणार्द ॥ गुरुसेवेवरते काही ॥ श्रेष्ठ ना  
 ४७ ॥ हा साधका ॥ ४५ ॥ सद्गुरु स्वरूपते जाण ॥ आखंड त्वें ब्रह्म परि  
 ४८ ॥ पूर्ण ॥ तेथें आवाहन विसर्जन ॥ सर्वथा आपण न करावें ॥ ४६ ॥ निः  
 ४९ ॥ कपट भावे संपूर्ण ॥ सद्गुरुसिजो अनन्यशरण ॥ त्याचे मिही वंदी

१०९  
१६

चरण। येथदरी जाणतो धन्य ॥ ४७ ॥ निर्लोभभावे सहज पुजितां तो  
 वेन्द्रधोक्षज त्या भावाचे निजगुह्य स्वयेयेदुराजसंगतु ॥ ४८ ॥ श्लोक  
 ॥ श्रद्धयोपाह्वानं श्रेष्ठं भक्ते नममवार्यपि ॥ गंधो धूपः सुमनसो दापो  
 न्नाद्यं च किंपुनः ॥ १७ ॥ टीका ॥ साक्षात् श्रुतिप्रति ॥ श्रद्धायुक्त  
 नन्यभक्ति ॥ भक्ती भावे जल अर्पीति ॥ तिलेंमी श्रीपति सुखावे ॥ ४९ ॥  
 जो जल विंदु येथ सुखें ॥ त्या सुखें से लीजे आदी पुरुष ॥ तव भक्त भा  
 वाचे हरी ॥ मिसुखरूप सुखें सुखावे ॥ ५० ॥ माझे नित्रै लोकासि  
 ॥ मिसुखरूप देखा ॥ त्या मज होय परम संतोष भावी  
 भेदित ॥ ५१ ॥ या जल बांदुचि या सांठी ॥ रमांना वडे गोमटि ॥  
 पोटी ॥ तोही से वटी ना वडे ॥ ५२ ॥ भाविकाचे ॥ १६ ॥

जेचे ब्राह्मण मजे विकुठ जालें फिके ॥ सोसुसे निचे निद्रा सुखें ॥ त्या  
 ब्रह्मा निद्रेना भावी काचे उदका पुटे ॥ मज आलिक काही  
 गोवड ॥ गंधादी पुजा जोडे ॥ नेवद चोखडे रस युक्त ॥ ५४ ॥  
 पुजेचि सुख प्राप्ति ॥ उपमाना ही त्री जगति ॥ ऐसा भाविकाची ये  
 भक्ति ॥ श्रीपति सुखावे ॥ ५५ ॥ भावे करीता भगवंत भक्ति ॥ मि  
 कृत कृत्य जालो निश्चीती ॥ ऐसा निश्चयेसि जो भावार्थी ॥ त्याचे नि  
 जळें संतृप्त मी होय ॥ ५६ ॥ येरु जो अभक्त दांभिक स्थीति ॥ जी  
 विद्रवाश बहविरक्ति ॥ लौकिक प्रतीष्ठे पुरति ॥ माझी भक्ति  
 जो मिरदि ॥ ५७ ॥ ऐसीया भक्ताचिये स्थिति ॥ छत्र चामर  
 गज संपत्ति ॥ मज अर्पिताही ॥ भक्ती ॥ सुखले सुचिति उपजे

ना ॥ ५७ ॥ क्षीरनिदं जं हंस ॥ तेथेनिसुंदीधलाकापुस ॥ तेविश्रभक्त  
 भजनिसंतोषमिदुषीकेशयावेना ॥ ५८ ॥ गायेकाचिगायेनक  
 काजिवितोषेनाकिंनरशळा ॥ तेवीश्रभक्ताचिभजनलीळा ॥ मा  
 द्दीचिकळातोषना ॥ ६० ॥ जेवीरजस्वळेचेपकान्न ॥ उत्तमपरीते  
 अतिहान ॥ तेविश्रभक्ताचेभजन ॥ कदाजनार्दनस्पर्शेना ॥  
 ६१ ॥ भजनानातळेनारायण ॥ ऐसेंश्रभक्ताचेभजन ॥ तेणेभजने  
 जनार्दन ॥ आनुप्रामाणतोषेना ॥ ६२ ॥ येवंभक्ताचेभजनमार्गदेउ  
 नियांश्रभक्ताकारभाग ॥ आतासमुच्चपुजामार्गसांगश्रीरंगसा  
 ६३ ॥ श्लोक ॥ श्रुचिःसंभृतसंभारःप्राग्दर्भैःकल्पितासनः  
 ६४ ॥ श्रीमःप्रागुद्वर्चिदचरियांत्वथसन्मुखः ॥ १८ ॥ कृतन्यासःक ॥ १७ ॥

सांगदलंपि... मने ॥ कलशंप्रोक्षणीयं चयथावदुपसा  
 ६५ ॥ टीका ॥ करुनिमलस्नानआपणवैदिकतांनि  
 कसंस्तान ॥ साफुनिनित्यविधान ॥ सुचितपणयानाव ॥ ६६  
 ॥ मंगलपुजासंभार ॥ शोधुनिकरावेंपवित्र ॥ यथास्थानि  
 पुजाप्रकारगंधादिउपचारठेवावे ॥ ६७ ॥ श्वेतकमळचळ  
 जन ॥ पूर्वदर्भाश्रितासन ॥ पुर्वाभिमुखबैसावेंप्रापण ॥ आ  
 यवाजाएउत्तरामुख ॥ ६८ ॥ स्थावरमुर्तिपुजितादेख ॥ आ  
 नकरादेमुर्तिसंमुख ॥ हेआसनविधिनिदोषि ॥ पुजा  
 न्यासादि... सांग ॥ ६९ ॥ श्लोक ॥ तदद्रिर्देवयजनंद्रमा  
 एयात्मानमेवच ॥ प्रोक्ष्यपात्रालित्रीएयद्रिस्तैस्तैर्द्रव्यैश्चसाध

येत् ॥ २० ॥ टीका विधियुक्त घालुनिःसंन गुरुसिकरावेनम  
 न ॥ परमगुरुपरमेष्ठिगुरुसिजाण ॥ आभिवंदनत्रातिप्रीति  
 ॥ ६९ ॥ जोमंत्रप्राप्तप्रापणं स ॥ त्यामंत्राचेदेहीकरावेन्यास ॥  
 मंत्रमुर्तिआणुनिध्यानास पुजामानसिकरावी ॥ ६९ ॥ जेमु  
 र्तिआलिध्यानासि ॥ तेचिआणुं वयाप्रतिमेसि ॥ हातिधरु  
 नियांआर्त्तसि ॥ करावेन्यासासिप्रतिमांलागि ॥ ७० ॥ कळश  
 आलिंप्रोणीजाण ॥ साधावियथाविधिजाण ॥ जळेकरु  
 निया ॥ दुर्वादिचंदनयथोक्त ॥ ७१ ॥ तेप्राक्षणपात्रिचेंजळ  
 ॥ चरवादि कनककंनिनिमळ ॥ तेणेंपूजासभारसकळ ॥ कुशा  
 थकेवळप्राक्ष ॥ तेप्राक्षांवेदेवसदन ॥ आपणंसिक ॥ १८

वेप्राक्षण ॥ प्रोक्षुनिद्वपुजास्थान ॥ पुजाविधानमांडावे ॥ ७२  
 पाद्यआर्घ्यआर्चनिय ॥ तदर्थमांडावेपात्रत्रय ॥ जळेपुर्लकरु  
 निपाण ॥ अन्नद्रव्यआहूपात्रत्रयासि ॥ ७४ ॥ शमांकदुवद्विवि  
 क्षुक्रांता पाद्यपात्रिहेंद्रव्यशुद्धता ॥ गंधपुष्पफळआक्षता  
 ॥ येवंकुशाग्रताआर्घ्यपात्री ॥ ७५ ॥ येलवाळाजतिफळ ॥  
 लवंगाकपुरकंकोळ ॥ आर्चनपात्रिहाद्रव्यमेळ ॥ सुद्ध ॥ ७६ ॥  
 जळसमयुक्त ॥ ७६ ॥ श्लोक ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयार्थत्राणि  
 पात्राणिदेशिकः ॥ हृदाशीह्लाचिशिखयागायत्रावाभि  
 मंत्रयेत् ॥ २१ ॥ टीका ॥ गुरुमंत्रदीक्षाजेसिज्यासि ॥ तोचि



२०॥

जीवक धारणा... तं करुनियाम्यक्त॥ योगिनिजभावनायुक्त॥ हृद  
 चिंतितभा... नानाजीवसमुहजाए॥ त्याजीवाचें आयतन  
 तेमाह... श्रीनारायण॥ हृदईसज्जनचितिति॥ २३॥ श्लोक॥  
 तं भूयापि... तेसंपूज्यतन्मयः॥ श्रीवाद्यार्चादिषु स्थाप्यन्य  
 मां प्रा... येत् २३॥ टीका॥ जेवीग्रहप्रकाशिदीपस्त्विति॥ तेवि  
 वजोति॥ तेसांगोपांगमाक्षिमुत्ति॥ हृदईचिंतितिसा  
 पतुपपणेंधिजले॥ तेविभूर्चनमर्ण्यक्तिसिभ्रालें  
 गवले॥ लिलावियहेजालेसाकार॥ २४॥ ऐ  
 चिन्मात्रेंतेजेदयदीप्ति॥ तेणें व्यापुनिदेह्या  
 नपजवि॥ २५॥ देहोजडमुठ्ठश्चेतन  
 चिधन॥ चेतनाकरुनिसचेतन॥ करवीनि ॥ २०॥

धारणा...  
 तं...  
 धारणा...  
 मानु...  
 तं...  
 जे...  
 म...  
 व...  
 १...  
 तं...  
 भेद...  
 श्रीभेदभक्ती...

जीव... चेंसोंगजाए॥ हरणीरुपेंनाचेंश्री  
 तारायेण॥ भजनपुजनस्वयेंकत्ता॥ २७॥ जेथेमाझी  
 मित्तवेसिंश्रीपति॥ आतडोनिभाक्ताआहति॥ स्वानंद  
 यापरीश्रीभेदभजनमुत्तिपुजितांचिधनपुज्यपुज  
 ठवए॥ सुरुजंजाएमावळें॥ २८॥ मावळल्याहाभजनभेदु॥  
 भक्तिश्रीभेदबोधु॥ हागुरुमार्गश्रीतिशुधु॥ प्रियेप्रसिधु  
 जीवकाश्रीफारमेघजळा॥ बांधोनियाघालिजेत  
 श्रीमजश्री... चायेकळवळा॥ श्रीभेदभजनालाश्रीतुडे॥  
 श्रीविव... जळ॥ तेणेंनुपजेचिउत्तमफळ॥ तेचितळभ  
 त्रवळ॥ ते... तीकेवळराजाने॥ २९॥ तेसंमाशेवाडेकोडे॥ श्री  
 भेदभक्तीमा... तेब्रह्मानंदेंगोंदळपडे॥ सिगचढेभक्तिसि॥ ३०॥  
 श्रीभेदभक्तीपा... तीर्थेयेतिपवित्रकावयासि॥ सुरनरला

२१

गतिपायासि सि... केसित्यामाजी ॥४॥ श्रभेदभक्तांपासिदेख  
 ॥ सकळ गी... नेदेशीं भक्तिचेमाहेरतेआवश्यक ॥ मजही  
 सुखत्याचेनि ॥ ५ ॥ श्रभेदजेक्रियास्थिति ॥ त्यानावमासिउत्तम  
 भक्ति ॥ ऐसाआतिउल्हासंश्रीपति ॥ उधवांप्रतिबोलतु ॥ ६ ॥ श्र  
 भेदभक्तिनाडेकोडे ॥ श्रीकृष्णसांगेउधवापुढे ॥ कथाराहे  
 लीये ॥ कडे ॥ केहीधडपुडेस्मरेना ॥ ७ ॥ देवोविसरलानिरो  
 पण ॥ तवउधवासिबाएलीखुण ॥ तोहीविसरलाउधवप  
 ए ॥ व... ॥ ८ ॥ श्रभेदभजनाचाहुरिखा ॥  
 देव... ॥ ९ ॥ दोघापडेनिठेलेठक ॥ परमसुखपा  
 व... ॥ १० ॥ तरीपुजाविधानाचाप्रश्न हे  
 करीव... ॥ १० ॥ त

२१

आचति ॥ उगाराहाताचीश्रीपति ॥ जाईलनिजधा  
 ॥ ११ ॥ उपासनाकांडगुह्य  
 ॥ उधवमिसेश्री कृष्ण वेदा  
 ॥ १२ ॥ सकळ वेदार्थशस्त्रविधी ॥  
 ॥ श्रीकृष्णत्रतिपादा ॥ जैसीश्रद्धातैसीसिद्धि ॥ होवाव  
 ॥ १३ ॥ श्रसोहिग्रंथविसृति ॥ ऐकतां  
 ॥ उधवनिवालांनि ॥ चिति ॥ तेणंश्रीपतिसु  
 ॥ १४ ॥ तेणं संतोषेंलणेश्रीकृष्ण ॥ उधवाहोर्  
 ॥ पुढीलपुजाविधान ॥ तुजमिसांगेनयथोक्त ॥ १५

॥२३॥ ॥पुज्यपुत्रकतारोकात्मध्यान करुनियां दृढधारन॥ तेचिवा  
 हापुजेलागिजाए करावे श्रावाहन प्रतिमंभाजि॥१६॥ प्रतिमां  
 सन्मुखप्रापण॥ श्रावाहनमुद्रादाखउनि॥ मासिचिक्कलासंपु  
 ली प्रतिमंभाजिजाएभावावि॥१७॥ तेकोमुर्तिचेंजडपण॥ निशे  
 खावेप्रापण॥ मुर्तिभावाविचैतन्यघन॥ मुख्यश्रावाह  
 न॥ १८॥ गुरुमुखे मंत्रनिर्देशे तेणें मंत्रे मुर्तिसिन्या  
 वेसवंगिंसावकाश शास्त्रविन्यासश्रागमोक्त॥  
 ॥१९॥ श्रावाहनसंस्थापन॥ संनिधीसंनिधापन॥ सन्मु  
 खागत॥ यामुद्राप्रापणदावाव्या॥ २०॥ श्रव  
 तीकरण॥ याश्रुष्टौमुद्रादाउनिजाए॥ मगहो

उनिता... ॥२१॥ श्लोक॥ पाद्योपशय  
 शरि... धर्मादिभिश्चनवभिः कल्पयि  
 त्वास... पद्मभद्रदलतत्रकणिकाकेसरोज्वलं॥ उभा  
 म्यांवे... भयसिद्धये॥ २५॥ टीका॥ स्नानमंडपकल्पु  
 निजा... देवविद्यन॥ पाद्यश्रुध्यं श्रावमन॥ मधु  
 पकवि... करावे॥ २६॥ इतरयथोक्तपुजन॥ करावेसीहासनी  
 संपु... श्रासनपिठावरण॥ स्वयंश्रीकृष्णसांगतु॥ २७॥ श्रभ्यंग  
 श्रागमद्वं... कथथोक्तस्नान॥ पितांबरपरीधानस्ना  
 नमंडपिजा... २८॥ सिंहासनीश्रावरणक्रम॥ श्राधार  
 प्रकृतीधर्म... क्षीराब्धिस्वतद्दीपकल्पद्रुम॥ मनोरमभा

॥२३॥

वावा २५ त्यातली मंडपनेटक ॥ त्यामाजिविचित्रापरीयेक ॥ त्या  
 मंचकाचाविवेक ॥ दुनायेकसागतु २६ ॥ धर्मज्ञानश्रौदार्यपेस्व  
 य ॥ हेचिमाचवे ॥ श्रुतिवर्य ॥ आधर्मज्ञानश्रानैस्वर्य ॥ श्रवैराग्ये  
 सिपाहाहोगाते ॥ २७ ॥ ऐस्वर्यतत्वनिजसुत ॥ गुणगुणी  
 वबुनितेथे ॥ मंचकुविनिलाश्राचुबित ॥ योगयुक्तमहामुद्रा ॥  
 २८ ॥ त्यामंचकावरीशेषपुठी ॥ शोभेश्रुतिशयेसिगोमटी ॥ स  
 हस्त्रफ ॥ तेजउठि ॥ छत्राकारपुष्टासळकत ॥ २९ ॥  
 सेशा ॥ निर्मळ ॥ विकासलेरातोसळ ॥ सकलिका  
 ३० ॥ शतशक्तिकमळकं  
 द ॥ कृतिस्राष्टधाजेसब ॥ ३३ ॥

॥२३॥

॥ ३१ ॥ ऐसकमळश्रुतिसुंदर ॥ षडवि  
 विसंगकलिकासधर ॥ मघमघितथोरसु  
 क मळदळीजाण ॥ देवतान्यासाव्यात्या  
 ॥ ३२ ॥ ज्ञाण ॥ क्रिया ॥ योगा ॥ ३३ ॥  
 ॥ ३४ ॥ कलिकामध्यस्थाना ॥ श्र  
 पावि ॥ ३५ ॥ श्रुताश्रुतरात्मापरमात्मा ॥  
 द्वात्तमा ॥ सत्वरजश्रुतिमोहतमा ॥ पु  
 ॥ ३६ ॥ ऐसिदापरीपीठन्यास ॥ श्र  
 ॥ ३७ ॥ कुरुनियाहृषीकेशसिंहासना

एणियुग्मवामरा नानावाद्यजयजयका  
 साधरः । सासनीश्रीधरवैस्वावा ॥३७॥  
 न्नावाहन मजन्नाधिष्ठानासिन्ना  
 कारासिजाए दावितिआपणविकारमु  
 वेदनालागी लोचन ॥ निशब्दाकल्पीतिश्र  
 रत्नासिवदन ॥ निमांसुरेजाए भाविति ॥  
 र्पेपुर्दत्त तत मजविश्वबाहुसिन्वा  
 गतितायेश स्थानभावितियेकदेसि ॥  
 मजदेहासिन्मलंकार ॥

॥२४॥

मजन्नाविचित्रभाविति ॥४१॥ मजन्ना  
 कारतविभेदधन ॥ मजन्नासिजन्मविधान ॥ नित्यतत्तासि  
 न्नासि ॥४२॥ गुणानुभाविनि ॥४३॥ यात्र वधीयाचा म्भीप्रा  
 त्यास्थान ॥ निर्वहो ॥ जैसाजैसाभक्तिभावो ॥ तैसामि  
 प्रकीर्त्ता ॥४४॥ मिन्नावाप्तसकळकामं ॥ पराभक्तिप्रेमा  
 नुश्री ॥ तैसाभक्ताचामनोधर्म ॥ तैसापुरुषोत्तममित  
 हासमुखभाग ॥ तैसिंभाविमाते ॥ मितैसाचिहोयत्यातें ॥ तोजे  
 ऋषोत्तमापु ॥ तैसिंभाविमाते ॥ मितैसाचिहोयत्यातें ॥ तोजे  
 गमोक्तसावद ॥ भक्तभावार्थे आपुबैसे ॥ तैसिंभाविमाते ॥

नायासेसहजे... मिसर्वत्रदेवाधिदेवो तैसाप्राणियावा  
 नकेभावाया... भक्ताचजेथेसद्भावो तेथेमिदेवोसहजेचि  
 ४७ या लागी तडे कोडे ॥ भक्तभावाथी मज आवडे ॥ भक्तभावा  
 हुनिपुढे... वडे श्रीराब्धी ४८ ॥ भक्तभावाथीचिभुष  
 ए ॥ अंगिवाए लाम्या श्रीकलें निगुलेहिसगुणहोए ॥ भा  
 वार्थगुए भक्त्या ॥ ४९ ॥ या लागी मिश्र जन्मा जन्म ॥ श्री  
 कर्महिकरी... अनामाही मिंधरीनामे ॥ भक्तमनिधर्म  
 तर... ५० ॥ मि... लागल्यामन मनचिहोयचैतन्यघ  
 न ॥ सगुणिसाव... साधकश्रीकलस्वयेहोय ५१  
 निगुण... के ॥ या लागी उपासना विवेक ॥ सगुण ॥ २५

बुद्धि... ५२ ॥ हे आगमोक्त उ  
 पाम... साधक पावतित्रि  
 श्री... ५३ ॥ तेचि उपासना विधि विधा  
 न... देवे सिंहासनि बैसल्या पुण पु  
 ता... ५४ ॥ श्लोक सुदर्शनं पांचजन्यं गदासी  
 शु... लंकोस्तु भंमालां श्रीवत्सं चानुपूजये  
 त... ५५ ॥ जीवकळ सिंदूर वरण ॥ सिंहासनि  
 स... गदी आयुधा वरण ॥ आपुलि आपण ह  
 रीसं... सुदर्शन शंखशोभे पांचजन्य ॥  
 गदागहनको मोदकी ५६ ॥ सारंग

धनुषत्रातिसव सुवर्णपुंश्वेबाणसरळ ॥ हळ आणी कमु  
 सला आयुधें प्रबळ पुजावि ॥ ५७ ॥ आवहि भुजा सायुध सरला  
 ॥ कंठी कौस्तुभतेजाळा ॥ कासेकासिलापिवला ॥ घनः सा  
 वलाशोभेतु ॥ ५८ ॥ ब्रह्मण्यदेवोरमानाथ ॥ ब्राह्मण चाचरण  
 घात ॥ हृदयं अलंकारमिरवत शोभात्राप्त ततेणशोभे ॥  
 ५९ ॥ चिद्रत्नायात्रालंकारी गुणकाठोनिबाहेरी ॥ वोव  
 लिवैजयातिकसरी ॥ हृदयावरी बेलत ॥ ६० ॥ यापरीसालं  
 कारसायुध ॥ पुज्या जुनियागोविंद मगपुजावेपा ॥ चंद  
 ॥ श्रीगोविंदबोलला ॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ नंदं सुनंदं गरुडं प्रचंडं  
 चंद्रमेखं महाबलं बलं चैव कुमुदं कुमुदक्षणं ॥ २७ ॥ टीका ॥ ६२

नंदसुनंददेवापासि गरुडसदातिष्ठे दृष्टिसि ॥ चंद्रप्रचंड  
 दाहिबाहुसि ॥ आहिलिसितिष्ठतु ॥ ६२ ॥ बलत्राणिमहाब  
 लं समुलसंशत्रव धानसिल ॥ कुमुदकुमुदाक्षकेवळ ॥ पा  
 ठीसिप्रबळबवेउभे ॥ ६३ ॥ गरुडदृष्टितिष्ठे आपण ॥ येरी  
 नंदादिजे आठेजण ॥ ते अष्टोदिशाप्रतिजाण ॥ पाशुदावरण  
 हरिकट ॥ ६४ ॥ श्लोक ॥ दुर्गाविनायकं व्यासं विष्वक्सेनं गुरुं  
 सुरान् ॥ स्वस्वे चानेत्वाभिमुखान् पूजयेत्प्रोक्षणादिभिः ॥ २८ ॥ टी  
 का ॥ दुर्गाविनायकं जाण ॥ व्यासत्राणिविष्णुकसेन ॥ चरुं को  
 निद्रागुरीरुहाण ॥ करावेपुजनदेवाभिप्रमुखें ॥ ६५ ॥ मुलमु  
 त्तिसि अनादि ॥ गुरुत्राणिपरमगुरु ॥ पारमेष्ठीगुरुसि

२९

येन कारु पुजा प्रकार करवा ॥ ६५ ॥ इंद्रादी आद्यै लोकपाल ॥  
 श्री बाहुनिया स ॥ ६६ ॥ स्थापुनित्र द्यौ दशके वळ ॥ तेही ताका  
 लपुजा वें ॥ ६७ ॥ गुरु दुर्गादिदा कपाळ ॥ पुजा वें सांगो पांग सकळ ॥  
 प्रोक्षण पादादित्र वीकळ ॥ पुजानिश्चळ करावे ॥ ६८ ॥ तेचि पु  
 जे वें पुजो प्रकार ॥ कोण कोण पें प्रकार ॥ साइं श्लोकिं सारंग  
 धर संक्षेपाकार सांगतु ॥ ६९ ॥ श्लोक ॥ चंदनो शीर कर्पूर कुं  
 कुमागर वासितैः ॥ सलिलैः स्नापयेत्सं त्रै नित्यदा विभवे सति  
 ॥ ७० ॥ स्वर्ण धमनिवाके नमहा पुरुष विद्या ॥ पौरुषेण पि  
 सूते न सा मनी राजनादिभिः ॥ ७१ ॥ टीका ॥ ये लावा ला कर्पु  
 चंदन कुंकुम केसर ॥ त्या माजी मेलतु नित्रा गर ॥ धुपि

२७

नेनी स्त्रपनासि ॥ ७० ॥ सुवासित सपरी कर ॥ गंगाजळ अति प  
 वित्र सुख मुद्रा पुरस्कर ॥ शिखिते नीर भरावे ॥ ७१ ॥ तैसें जळ घे  
 उनिया मुद्रा ॥ आपस्तमशास्त्रिचे प्रसिध्द ॥ सुवर्ण धमनिवाक  
 पद ॥ ते एत्र मिषे कुविषद करावामज ॥ ७२ ॥ अथ वाके वळपु  
 रुष सूक्त ॥ अथ मिषे कविष्णु सूक्त ॥ इह मंत्रि मंत्रोक्त ॥ देवा  
 सियथोक्त स्नानद्या वें ॥ ७३ ॥ कां साम वेदि वें शाम गायन ॥ त्या  
 माजी साम राजजाण ॥ तेले हिक रुनियां जाण ॥ देवा सि  
 स्नानिक रवा वें ॥ ७४ ॥ आसिल्या वें भें सपन्न ॥ नित्यद्या वेमहा  
 स्नान ॥ नां तसे पर्व विशेषे जाण ॥ करावे आपण संवादी  
 की ॥ ७५ ॥ आन ॥ सुलक्षण ॥ महापुरुष विद्या पूर्ण ॥

२३

ते एंही करि तुम्हाला देवा सि स्नान करावे ॥ ७६ ॥ देवा सि  
 पुण जा लिये मना न ॥ करावे मंगल निरा जन ॥ मग वस्त्रा  
 ले कार भुषण ॥ देवा सि आण अणु पवि ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ वस्त्रा  
 पवीता भरण ॥ वस्त्रा गंध लेपने ॥ अलंकु वी ते स प्रेम म  
 द्र क्तो मां यथोचितं ॥ ७८ ॥ टीका ॥ देव स्वरु पे धन सावळा ॥  
 का से का सा वा सान सळा ॥ हे म सु त्रे अ पु नि गळा ॥ रत्न  
 मे ख ला वा ना वि ॥ ७९ ॥ वां कि अं दु वा चा गजर ॥ चर एि ने  
 पु रा चा स ए का र ॥ मु गु ट कुं ड ले मनो हर ॥ हृ द ई गं भी र  
 न हा प ट का ॥ ८० ॥ ज डी तं मा तिं ल ग प त्रा व लि ॥ आ ति शे  
 भि त द्दी से मि ड वी ॥ टी ल कु य व ला त ली ॥ कं ठी श ल ला ली ॥ २८ ॥

कौस्तुभ ८१ ॥ बाहु बाहु वडे कर कं क एं ॥ करी मुद्रिकार त्र खे  
 ल व एं ॥ पिता वर सदा के को ए माने ॥ रवी बिंब ते एं लाज विले  
 ॥ ८१ ॥ सावळी आंगी गोमटी ॥ शुभ्र चंद ना वि सो भे उटी ॥ सुम  
 न माळा विर गुठी ॥ हा य घर टी म धु करा ८२ ॥ वैजयंति वन मा  
 ळा ॥ आपाद रुते गळा ॥ धव ध वित दी से डोळा ॥ धन साव  
 ळा शे भ तु ८३ ॥ वस्त्रा ले कार भुषण ॥ स्वयं पुजा वा  
 सारंग पाणि ॥ पुजे हो उ निया मनि ॥ अज्ञा को टि गुणी अ  
 सा वि ८४ ॥ कृ त्ति संपन्न कां अ सो अ किंच न ॥ येथे  
 शुद्ध अ ध्या स ॥ गी ते थें नारायण संतुष्ट ॥ ८५ ॥ सकळ पु  
 जेचे कारण ॥ अ ध्या चिकारण ॥ अ संत अज्ञा जो सं

॥२९॥

पत्र मोदेवाचाप डीयंता ॥८६॥ श्लोक ॥ पाद्यमाचमनीयंच  
 गंधसुमनसो ॥ धूपदीपोपहारालिदद्यान्नेश्रद्धयार्चकः  
 ॥३२॥ टीका ॥ वेदमुक्तिं श्रद्धारी ल्यांसंपुर्ण ॥ द्यावेपाद्यार्घ्यं श्र  
 दमन ॥ देवनिमधुपर्कविधान ॥ करावेपुजनश्रद्धायुक्त ॥ ८७  
 ॥ गंधाक्षतास्तुधुसुमन ॥ धुपदशंगदोपदान ॥ दीपावलीनि  
 रंजने ॥ श्रद्धाम ॥ चनसाधका ॥ ८८ ॥ श्लोक ॥ गुडपायससर्पि  
 षिशकुल्यापूपमोदकान् ॥ संपावदधिसूपांश्चनैवेद्यंस  
 तिकल्पयेत् ॥ ३३ ॥ टीका ॥ जालीयाधूपदीपनिरंजन दे  
 वासिवोगरावेभोजन ॥ नानापरीचिपकान् ॥ श्र ॥ नेसद  
 जंरसयुक्त ॥ ८९ ॥ प्राशंसावरगुळवरी ॥ शडुल्यान्म ॥ २९ ॥

फळेक्षिरार ॥ दुधाभाज ॥ प्रालिक्षारी ॥ वाढिलीपरी  
 दलबडा ॥ मधुबडाकोरवडा ॥ वाडुतिलवयाचाजो  
 ॥ कचिन्नाला ॥ बवडा ॥ ठायांपुणवाढीला ॥ ९१ ॥ पत्रश  
 खाचिप्रभावली ॥ भातश्र ॥ रुवारजीरेसाळी ॥ सुपसोलिव  
 मुगदाळी ॥ गो ॥ परीमळीसद्यस्त ॥ ९२ ॥ साजासडीवगु  
 डयुक्त ॥ बेलामिरेघालुनिन्नात ॥ पाककेलाचुतमिश्रि  
 त ॥ सेना ॥ त ॥ रुवातश्ररुवार ॥ ९३ ॥ कथिकातक्राचिगो  
 मटी ॥ श्र ॥ रसेभरलीवाटी ॥ सिरवरएकेलाचीवाटीता  
 टी ॥ देखोनिल ॥ गोटीश्र मरेद्रु ॥ ९४ ॥ दधिदुधसायसा  
 कर ॥ नेवेदावा ॥ लेसपरीकर ॥ देवोनपाहेउपचार ॥ श्र

॥३०॥  
वर

द्वाश्रीधरनृत्तहोर ए०५ सामर्थ्यश्रासेलकरावयासि॥ त  
 रीहेपरडीप्रादिवसि॥ नैवेद्यश्रुर्पावादेवासि॥ नातरीप  
 वविशेषेसिश्रुर्पावि॥ ए०६ उपासकमुक्तिजेसाचार॥ जेज  
 यंतिसिसविस्तर॥ पर्वविशेषउपचार॥ पुजाश्रु पारहरीसा  
 गे॥ ए०७ शुक॥ श्रुभंगोत्तरनादशदंतधावाभिषेचनं  
 ॥ श्रुत्ताद्यंगनृत्यादिपर्वणिसुस्तथान्वहं॥ ३४॥ टी  
 का॥ पर्वेधोतिलेश्रुगमोक्ति॥ श्रुथवावार्षिकेपर्वेये  
 ति॥ कोनिजमुक्तिचिजयंति॥ तेपुजाश्रीपतिस्वयेसां  
 ए०८ दंतधावनउद्धर्तन॥ मुक्तिसिद्यावेश्रुभंग

॥३०॥

पंनभृतेकरुनिस्त्रपन॥ विचित्राभरणपुजेसि॥ ए०९  
 मुनिसांरुतदेवासि॥ नैवेद्यश्रुर्पावाषडरासि॥ देउनि  
 करोद्धर्तनासि॥ मुत्रवासासिश्रुर्पावि॥ ३००॥ देवोविसरला  
 देवपणासि॥ देवपलेभेटीदेवासि॥ एसियादारववावेश्रु  
 दर्शासि॥ तेएववासिश्रुल्लादु॥ १॥ पर्वविशेषिजयंतिसि॥ मे  
 ळउनिसंत॥ ह्यवासि॥ करावेगीतनृत्यकीर्तनासि॥ श्रुति  
 प्रेमेसिश्रुहोरात्र॥ २॥ श्रुगमोक्तदीक्षाहवन॥ करितांता  
 काळदेवप्रान्न॥ त्याहोमाचेविधिविधान॥ ऐकसांगे  
 नउद्धवा॥ ३॥ एक॥ विधिनाविहितेकुंडेमेखलागर्त

॥३१॥

वेदिभिः ॥ अग्निः ॥ परितः समूहेत्यालिनोदितं ॥ ३५ ॥ परिस्ती  
 ययिपयुक्षेदने ॥ यथयथाविधिः ॥ प्रोक्षण्यासाद्यद्रव्याणिप्रोक्ष्या  
 ग्रावारुयेतमं ॥ ३६ ॥ टीका ॥ आगमोक्तकुंडविधानं ॥ लांबकुंडरवो  
 लिकोनगणोनिउंचिवेप्रमाणं ॥ कुंडसंपुर्णसाधावे ॥ ३७ ॥ स्वशाखाजं  
 वेदप्राप्तं ॥ मेखलायुक्तसाधावागर्तं ॥ योनिसंघटवेदीतेथे ॥ लक्ष  
 णोक्तसाधाविं ॥ ३८ ॥ तेथेकरुनिंआवाहनं ॥ प्रतिष्ठिलाजोहताश  
 नं ॥ त्यासिकरुनिकरस्पर्शनं ॥ परिमोहनकरावे ॥ ३९ ॥ दभीकरा  
 वंपरिस्तरणं ॥ गगकरावेंपरीयुक्षणं ॥ दूध्माबहिर्विसर्जनं ॥  
 त्रेथेथानठेवावे ॥ ४० ॥ करुनिबहिर्वेत्त्रास्तरणं ॥ करावेत्त्रा  
 पस्थानं ॥ वेत्स्थापनं ॥ व्याहृतिसमिधाहोमजाणं ॥ अन्वाधा ॥ ३९ ॥

स ४

त्याना ॥ ४१ ॥ प्रोक्षाणीपात्रिवेविधानं ॥ करुनिभरावेजलपूर्णं ॥ तेणे  
 ठेकरु ॥ आपणं ॥ होमद्रव्याजाणप्रोक्षावि ॥ ४२ ॥ कुंडोप्रदीप्तहु  
 ॥ ४३ ॥ तेथेकरावेमाक्षेध्यानं ॥ तेथ्यानमुत्तिचेलक्षणे ॥ स्वयेश्रीक  
 लसागतु ॥ १० ॥ श्लोक ॥ तप्तजांबूनदप्रखंशंखचक्रगदांबुजैः ॥ ल  
 सखंतुभुजंशंतंपद्यकिंजल्कवाससं ॥ ३० ॥ स्फुरकिरीटकटकक  
 टिसूत्रांबरंगदं ॥ श्रीवत्सवक्षसंभ्राजकौस्तभंवनमालिनं ॥  
 ३६ ॥ टीका ॥ जवितप्तसुवर्णभा ॥ तैसिमुत्तिचिभ्रंगप्रभा ॥ चतु  
 भुजसाजरीशोभा ॥ चिन्मात्रगाभासाचार ॥ ११ ॥ शंखचक्रगदा  
 कमळ ॥ कासेपितांबरसोज्वळ ॥ लोपोनिश्रुतिप्रभाजाल ॥ पु  
 त्तिप्रभाप्रबद्ध ॥ कासे ॥ १२ ॥ मुकुटकुंडलेमेखला ॥ श्रीवत्स

...रुणकल्यावे ॥२१॥ मगबाह्यप्रतिमापुजा  
 ...नियाआपण मुळमंत्राचे स्मरण ध्यान ॥ विधी  
 करावे ॥२२॥ पुज्यपूजक अभिन्न परात्पर नारायण ॥ तेप  
 उनिमन घालावे आसन सावधान वृत्ति ॥२३॥ ध्या  
 रावे मन ॥ तवस्त्री रराखावे आसन ॥ तेथुनि उपरमल्या  
 नाविधान हरी सांगे ॥२४॥ श्लोक ॥ दत्ताचमन मुखे षं विष्वक्से  
 पयेत् ॥ मुखवास सुरभि मन्त्रा ब्रूलाद्यथा ह्येत् ॥४२  
 एवं विसर्जित्या ध्यान जाले देवाचे भोजन ॥ ऐसे भाउनि  
 पुनः सुधाचमन आर्पावे ॥२५॥ श्रीमाजिल मुक्ति  
 ...जिली जे आपण ॥ दोही ठाडू सुधाचमन य  
 २६ देवाचे मुक्त शेषासि ॥ भागुद्या वा ॥३३॥

॥३३॥

पाषाणमणि यासि ... दफु लेवनमाळा ॥ शळके गळा कौस्तु  
 स्थान ॥ तेथे येन आधन भव्यदाफुणि हविषालि घतानि च ॥ प्रा  
 युक्त जाण ॥ वारो दत्तावा ज्यन्तु तं हविः ॥३६॥ टीका ॥ ऐसे सां  
 रब्रली ॥ ॥ श्रीमाजी भाउनि जाण ॥ श्रद्धाधरुनिया पूर्ण  
 नेजवर्ति ॥ लेवनमांडावे ॥१४॥ श्रीविधुक्त आकाणुनि स  
 म नधालो मघते अभिघारुनि ॥ आज्यभागदो अरुवदानि ॥ प्र  
 न ॥ हवनिलोभावे ॥१५॥ तेथें तिला ज्यद्रुवी द्रुमपूर्ण ॥ घतस्त  
 ॥१६॥ श्रीगमोक्त लोमविधान स्वये श्रीकृष्णसांगतु ॥  
 ॥१७॥ प्रति ... मूलमंत्रेण षोडशर्चावदानतः ॥ धर्मादि  
 योक्त जाण करावे ॥ ॥१८॥ टीका ॥ लक्षुनिमुख ॥३३॥

॥३३॥

पाषण्डायादि... आदरु केवनमाळा ॥ शळकेगळाकौस्तु  
 स्थान ॥ तेथेयेन आधनभर्चदाफूणिहविषालिघतानिव ॥ प्रा  
 युक्तजाए... चारोदत्वावाज्यनुतंहविः ॥ ३९ ॥ टीका ॥ ऐसेंसां  
 रब्रह्मी... ॥ आग्निमाजीभाउनिजाए ॥ श्रद्धाधरुनियापूर्ण  
 नेजव... हवनमांडावे ॥ १४ ॥ आग्निविधुक्त आकाए, निःस  
 म... लोमघृते अभिघारुनि ॥ आज्यभागदो अरुवदानि ॥ प्र  
 न... हवनिलोमावे ॥ १५ ॥ तेथेंतिलाज्यद्रुवीद्रुमपूर्ण ॥ घृतस्त  
 ॥ १६ ॥ आगमोक्तलोमविधान स्वयंश्रीकृष्णसांगतु ॥  
 प्रा... प्रति... शर्चावदानतः ॥ धर्मादि  
 योक्तजाएकरावे ॥ १७ ॥ टीका ॥ लक्षुनिमुख

॥३३॥

तिष्ठ... मगकाहड... एगसि ॥ द्यावेदेवासिकरोघर्त  
 सुपांराफोड ॥ सुवर्णवर्णपानाचिविडी ॥ काथ  
 सतापरवडी ॥ अभीनवगोडीतांबूला ॥ २८ ॥ येलालवंगाक  
 काल अल्परूपिलेंजातकल ॥ सुरंगलेतांबोल ॥ दीसेमुखकमळ  
 साजीरें ॥ २९ ॥ चौक कस्तुरीबुकासधर ॥ अ पुनिपुष्पां जुळि  
 संभार तेलेशीघ्रसतोषेश्रीधर ॥ तेप्रेमसाचारहारीसांगे ॥ ३० ॥  
 श्लोक ॥ उपगायन एतन्त्यन्क मण्यभिनयन्मम ॥ सकथाश्राव  
 यनश्च एवन्मूढुर्नक्षालिको भवेत् ॥ ३१ ॥ टीका ॥ ज्ञानध्यानउपा  
 सकथा ॥ हेगोनजाएसर्वथा ॥ देवोभावाचाभोक्ता ॥ भावेतल  
 तादेदोभेटें ॥ ३२ ॥ ध्यानउठलियानिजमन ॥ करावेमाझेनामम  
 राण... चेश्रवण ॥ आदरेंजाएकरावे ॥ ३३ ॥ करी

तः हरिगुणयेशश्रवण॥ ते एं सुरवावेंत्रंतः करण॥ सुखेसुखा  
 वौनिश्रापण॥ स्वयं हरी कीर्तनकरावे॥ ३३॥ निर्लज्जनटाच्या  
 परी॥ हरीरंगनी नृत्य करी॥ हावभावकजाकुसरी॥ अच्यो  
 धरीकर्माचा॥ ३४॥ गोवर्धन उद्धरण॥ अगेंदाउनिश्रापण॥ कां  
 मांडुनियां दृढ ठाणे॥ त्रिंबकभजनदावावे॥ ३५॥ पुतनाप्राणशे  
 षण॥ कुवल्याचे निर्दळन॥ दाखउनिमह्नमर्दन॥ हरीकीर्त  
 नकरावे॥ ३६॥ नवप्रेमाचा उद्धोधु॥ गद्यपद्यनानाप्रबंधु भुजं  
 गप्रतापादीश्रगाधु॥ गातिस्वानंदं स्तुतिस्तोत्रे॥ ३७॥ श्लोक  
 ॥ नवैरुच्चावचैः श्रौतैः पौराणैः प्राकृतैरपि॥ स्तुत्वा प्रासिद्ध  
 भगवन्निर्वंदंतं उवत् ॥ ४४॥ टीका॥ माझी स्तुतिस्तोत्रे  
 पुराणें॥ सादरें करावे श्रवाण॥ श्रोतामिनल्या श्रापण॥ ॥ ३४॥

कथा॥ ३१॥ पणसांगावे॥ ३२॥ शुद्धनयेस्तोत्रपठन॥ करीतां श्रवध  
 गायन॥ पाठकादोशनलगेजाण॥ ते एं होय निर्दळनमहादाशा॥  
 ३३॥ वेदीचे उपनिषदपठण॥ कांरुचामात्रें हरिचें स्तवन॥ ये लो  
 किकि उंचावले जाण॥ देवासिसमाननिजभावो॥ ४०॥ पुराणी  
 चें श्रेष्ठस्तोत्र॥ अथवापठतां नाममात्र॥ अर्थे भावार्थे साचा  
 रसमानशी धरमी मानि॥ ४१॥ ते एं वेदशास्त्रपुराण॥ केव  
 लबाळाभोळाजाण॥ ते एं करीतां प्राकृतस्तवन॥ मिजना  
 र्दनसंतोषे॥ ४२॥ वेदीचुकल्यां स्वरवणी॥ पाठकादोषबाधि  
 गरुन॥ प्राकृत करीतां हरीचें स्तवन॥ दोषनिर्दळण ते एं हो  
 य॥ ४३॥ शस्त्रपुराणपुराणस्थिति॥ पाहीजे पंचमीसप्त

॥२॥

मीवित्यन्ति॥ प्राकृताः श्रावधिनाहिकिति॥ भगवत्प्राप्तिपावक  
 ॥४४॥ संस्कृतवाणि देवेकेलि प्राकृतचोरापासुनिजालि॥ श्री  
 सोतुयाः श्रीभीमानबोलि देवाचिचालिनिराभीमानि॥४५॥  
 वेदशास्त्रहोपुराण॥ कांप्राकृतभाषास्तवन॥ येथेभावोविश्रे  
 षजाण॥ तेणेंनारायणसंतोषे ४६॥ देवासिप्रेमाचेंपढीयेकोड  
 ॥ नपाहेवित्यन्तिनेकाबाढ॥ भाविकाचाभावार्थगोड॥ तेणेंभक्ता  
 सिभीडनुलेंघवेदेवा॥ ४७॥ येवंभावार्थेकरीतास्तवन॥ देवोहो  
 यभक्ताधीन॥ तेणेंभावार्थेकरुनिनमन॥ हरीचरणवंद्यावें  
 ४८॥ मुहुर्त्तनिमिषक्षणेक्षण॥ हरीचरणिसुखावल्ल्यामन॥  
 इतरेंआपारतेणेंसुखेंजाण॥ सहजेआपणवोसरति॥४९॥ जे

॥३५॥

एतुटेमाशेंआनुसंधान॥ तेंकर्मआगावेआपण॥ जेणेंस्वरूपि  
 निरालोयमन॥ तेसनाधानरागवावें॥ ५०॥ सप्रेमकरीतानमन  
 ॥ नित्यनुतनसमाधना॥ त्यानेंमनाचेंलक्षण॥ लोटांगणदंड  
 वत्॥ ५१॥ सुठल्यांदंडसत्राणें॥ समुखचिंमुखपाहोनेले॥ तेसि  
 घालिलोटांगणें॥ देहाभीमानअहेतुक॥ ५२॥ असतांदेहा  
 चेंअनुसंधान॥ जोपरमार्थीकरीनमन॥ त्यानमस्काराचें  
 लक्षण॥ स्वयंश्रीकृष्णसागतु॥ ५३॥ श्लोक॥ शिरोमत्यादयोः  
 कृत्वाबाहुभ्यांचपरस्परं प्रपन्नपाहिणाम्॥ शभीतंमृत्युग्रह  
 णवित्॥ ५४॥ श्लोका॥ मस्तकुमाश्याचरणवरी॥ उभयबाहुप  
 रस्परि॥ दोन्हिनरएदोन्होकरी॥ धरीनिधारीभावार्थे॥ ५५

॥३६॥

संसारसागरा आपोटा ॥ मृत्युग्रहे घातली मिठी ॥ चरणे ला  
 गोठठाउठी ॥ जजगजे ठिसोडवि ॥ ५५ ॥ भवभये भ्यालो दाफ  
 ए ॥ याला गीतुजला आलो शरण निवारी जन्मजरा मरण  
 ॥ भावेश्री चरणदुट धरीले ॥ ५६ ॥ तुं स्वामि आसतां शि  
 री ॥ मज मृत्युबापुडे के वीमारी ॥ भावेलो टांगण चरणवरी  
 ॥ कृपाउधरी कृपाळुवा ॥ ५७ ॥ देखोनि साहांगन मन ॥ ऐको  
 निभयाभीतस्तवन ॥ मजतुष्टलानारायण ॥ ऐसे आपन  
 भावावे ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ इति शेषां मया दत्तां शिरस्या धाय  
 सद्गं उद्धासयेत्तु दुःखास्यं ज्योतिर्ज्योतिषितत्पुनः ॥ ५६ ॥  
 ॥ टीका ॥ म्यादी धलाशेस्यसादु ॥ तोसिरी धरुनियां स्वा

३६

नंदु ॥ स्व ॥ वरमुनिजेथेप्रसि ॥ तेथे उद्धास्यसमंधनकरा  
 ॥ ५९ ॥ जंगमप्रतिमा मुनि ॥ ते आवाहिली निजात्मज्यो  
 ति ॥ ते उद्धासुनिया मागुती ॥ निजात्मस्थिती ठेवावि ॥ ६० ॥ मु  
 निमाशारी लज्योति ॥ आणुनियां हृदये स्थिति ॥ मगनिजा  
 लज्योतिसिज्योति ॥ येथे स्थिति मेळवावी ॥ ६१ ॥ विसर्ज  
 नातपुजा स्थिति ॥ ऐकोनि उद्धवाचे चिन्नि ॥ साधकांको  
 णपुजे मुनि ॥ देवाते न् ॥ स्वये सांगे ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ अ  
 र्चादिपुय ॥ यत्र श्रद्धामांतत्र वाचयेत् ॥ सर्वभूतेषा  
 लनिचसर्वात्साहमवस्थितः ॥ ६३ ॥ टीका ॥ उद्धवाजेमु

॥३७॥ त्रिज्यासिपदीयंति। तेचित्यासिपुज्यमुत्ति। तुंवाही आणुमा  
 न्नचिन्ती। संदेहयदर्थनिधरावा ॥६३॥ विष्णुविरंचिसविता  
 जाल शिवः क्तिकां जंगवदन ॥ त्यामुत्तिमाझीमी आपण  
 ॥ सर्वसमानसर्वात्मा ॥६४॥ सर्वप्रतिमाचेंपुजन ॥ करीताम  
 जपुजास गान ॥ भक्ताचीप्रीतजेथेगहन ॥ तीआधिनमी  
 परमात्मा ॥६५॥ जेविबालकाचेनिमेळे ॥ मातातदनुकरवे  
 ळे ॥ तेविष्णुभक्तप्रेमाचियेलीले ॥ म्याचित्तक लोखंकिडि  
 ने ॥६६॥ यासर्वभूताव्यागार्ड ॥ आणुवतारादीलीछादे  
 ॥ तेसर्वासिसमानपाही ॥ यदर्थिनाहीसंदेहो ॥६७॥ उ  
 द्भवामिनाहीऐसे ॥ ऐसागवोकोळीरितानदीसे परी ॥३७॥

आणुयाचेंभाग्यके ॥ त्याभजविस्वासेनभजति ॥६८॥ जोजे  
 ॥ भजभजावेजैसे ॥ त्यासंमितेथेतैसाचआसे ॥ हेउपास  
 गकाडविशेषे गुप्तआनायासेंप्रकासिले ॥६९॥ उपासना  
 कं ॥ बानिवाहो ॥ मिसर्वभूतिदेवाधिदेवो ॥ हाज्यासिनकळे  
 मुख्यभावो ॥ त्यासिमुत्तिनिवाहोद्योतिला ॥७०॥ हेकामाझीप्र  
 तिमानुत्ति तैमीचिदात्मानिश्रीति तेथेंकरीताभावेभक्ति ॥  
 भक्तउद्दरतेउद्दवा ॥७१॥ श्लोक ॥ एवंक्रियायोगपथैःपुमा  
 न्वेदिकतां त्रकैः ॥ अर्चन्नुभयतःसिद्धिमत्तोविंदत्यभीप्सि  
 तां ॥४०॥ टीका ॥ तेनक्रियायोगलक्षण ॥ वैदिकतांत्रिकमिश्र  
 जाल ॥ आगम ॥ विस्तारगहन ॥ तोमुख्यत्वेपूर्णसांगि

॥३८॥

लता ॥ ७२ ॥ ये एते लिङ्गायोगभजनमार्गे ॥ भक्तजै भोगमोक्षमार्गे ॥  
 ते उभयसिद्धिभागवेगे ॥ म्याश्रीरंगेऽपि जे ॥ ७३ ॥ भावे निःका  
 मन्नानन्यगत्की ॥ तै भोगमोक्षादी संपत्ति ॥ घे उनिया मिश्रीपति  
 ॥ त्याचाद गप्रति सदां तिष्ठे ॥ ७४ ॥ श्लोक ॥ मदचं संप्रतिष्ठाप्य  
 मंदिरं कारयेदृढं ॥ पुष्पोद्यानानिरम्याणि पूजायात्रोत्सवाश्रिता  
 ॥ ४६ ॥ टीका ॥ सांगमासी प्रतिमामूर्ति ॥ करुनिजे प्रतिष्ठा करीति  
 ॥ दृढ देवालयें उभारीति ॥ श्रुति प्रीति मद्भावे ॥ ७५ ॥ वन उपवन  
 उद्यान ॥ पुष्पवाटिका लावावापूण ॥ नित्यपूजेचे विधान ॥ उत्स  
 वजा एमहापूजा ॥ ७६ ॥ यात्रा बहुजनसमाजा ॥ वार्षिक वर्षे  
 म... ॥ चालवावे श्रद्धोक्षजा ॥ उपावसह जाहरी सांगे ॥ ३८ ॥

या १

७७ ॥ ७७ ॥ ज्ञादी जंत्रना हार्दे महापर्व सुचान्वहं ॥ क्षेत्रार्पणपुरया  
 ॥ ७८ ॥ टीका ॥ नित्यपूजा महापूजा वार्षि  
 ॥ ७९ ॥ टीका ॥ नित्यनिर्वाहो महापूजा ॥ ग्रामसमाजा अर्पुनि ॥  
 ८० ॥ क्षेत्रलक्षणी जैतगरुन ॥ हाट उपवन द्रव्यपावन ॥ हाठें विलतोया  
 मजा ए ॥ एक लक्षणपुरावे ॥ ८१ ॥ हाठयुक्तते पुरपाहं ॥ जे श्रुति  
 ति देवालय ॥ तै माझे स्वयं पाहं ॥ सर्वाही ठाड पावति ॥ ८२ ॥ मू  
 र्तिप्रतिष्ठा पूजाविधान ॥ देवालय के लिये जाण ॥ कर्तयेसि  
 फळकोण ॥ शशी कृष्णसांगतु ॥ ८३ ॥ श्लोक ॥ प्रतिष्ठायां सार्व  
 भौमं सद्यगो भवनत्रयं ॥ पूजादिना ब्रह्मलोकं त्रिभिर्मत्सा  
 ॥ ८४ ॥ टीका ॥ जो मूर्तिप्रतिष्ठा करुनि ठायें ॥ तो

॥३२॥ सार्वभौमगज्य <sup>य</sup> जो देवाले करी स्वये ॥ तो स्वामि होय ति हो  
 लोकी ॥ ८२ ॥ जो करी पूजा ध्यान ॥ तो पावे ब्रह्मसदन ॥ येति न्ही  
 जो करी श्रम ॥ तो मजसमान ऐस्वर पावे ॥ ८३ ॥ ऐसे हेति घे  
 साधक ॥ ठीहुनि सकामक ॥ कामने सारी खे लोक ॥ ते श्रव  
 श्यक पावति ॥ ८४ ॥ ज्या सीमा शेंनिः काम भजन ॥ त्या चें निज  
 प्राप्ति चेल ॥ ते श्रव ॥ श्री कृष्ण ॥ स्वानंद पूर्ण सांगतु ॥  
 ८५ ॥ श्लोक ॥ ममैव रिपेक्षेण भक्तियोगेन विंदति ॥ भक्तियो  
 गं सलभते एवं यः पूजयेत्तमां ॥ ४२ ॥ टीका ॥ मजमुख्यत्वे जिवा  
 यरुन ज्यासिनिः काममाशें भजन निः कामताजे श्रनन्य  
 श ॥ ते पुरुष जाणमि होति ॥ ८६ ॥ तो वत्तमान देहा श्रस ॥ ३१ ॥

ता ॥ ज्ञेनिजस्वरूपतत्पता ॥ त्या आत्मा आतोता ॥ भेदु सर्वथा  
 ॥ ८७ ॥ करीता निष्काम भजन ॥ भक्त जाला मजसमान  
 ॥ समान ह्मणवया जाण ॥ वेगळें पण श्रसेना ॥ ८८ ॥ येवं भक्त तो  
 मभीतरी ॥ मिभक्ता आतु बाहरी ॥ ऐसें मिसळले परस्पर ॥ नि  
 जभजनावरी नांदत ॥ ८९ ॥ गुळ जे विगोडा येसि ॥ कांक धोळ  
 सागरासि ॥ ऐसिनिज भक्ति पासि ॥ श्र ॥ अतया सिरहि वासु ॥  
 ९० ॥ ऐसिजानिः काम भक्त करी ॥ तो धन्य धन्य सचराचरी ॥ जो  
 देवादि जाचि दत्ति हरी ॥ तो पचे श्रघोरी ते ऐक ॥ ९१ ॥ श्लोक ॥ यः  
 स्वदत्तां परैर्दत्तां हरे द्वासुरविप्रयोः ॥ वृत्ति सजायते विद्मवर्षा  
 णामयुतायुत ॥ ४३ ॥ कर्तुं श्वसारथे हंतोरनुमादितुरेव च ॥ कर्म

॥ ५४ ॥ टीका ॥ जो देवा लये  
 च धरिहरी ॥ जो ब्रह्म एव तिचा लोप करी ॥ तो अयुता अयुत  
 वर्षे सहस्र ॥ योनि शूकरी विष्टा भोगी ॥ ५५ ॥ जो हि ज देवा चि  
 वृत्ति हरी ॥ जो होय साहा कारी ॥ कां जो अनुमोदन क  
 री ॥ ते तिचे अघोरि पविजेति ॥ ५६ ॥ तेज नमरण व्या आ  
 वृत्ति ॥ ते चि कळ पुढ तो पुढ ति ॥ मरमरोनिगा भोगिति ॥ जा ए  
 निश्चीत ॥ वा ॥ ५७ ॥ माझे प्राप्ति चि आवड चि न्ना ॥ तरी ना त  
 ॥ अथ मये ता चि कथा ॥ स्वभावे सर्व ध्यान करा वि  
 ॥ जो शिद शनि ॥ न बोलावे वर्म स्पर्शन ॥ भूत मात्रा  
 ॥ ५८ ॥ नाईका विपरनि ॥ ४० ॥

॥ ५९ ॥ वादा ॥ अथ ना चि या संवादा ॥ कोण सि कदा  
 ॥ त्रैलोक्ये चि पाप असंख्य ॥ ज्या सि घे एं असेल  
 आवश्य ॥ ते साधु निदानि ज मुखें ॥ यथा मुखें करा वि ॥ ६० ॥  
 सकळ दुखा चि या चिरासि ॥ अगत्य या व्यामज पः सि ॥ ऐसि  
 आवडि ज्या व्यामान सि ॥ ते ए ब्रह्म द्वेषा सिं करा वे ॥ ६१ ॥  
 सकळ काल वृथा जावा ॥ ऐसे आवडे ज्या व्याजी वा ॥ ते ए  
 सारी पाप ॥ आवया ॥ खेळु मांडा वा आही लि सि ॥ ४० ॥  
 मिहृदये स्थि आत्माराम ॥ स्वत सिद्ध पूर्ण ब्रह्म ॥ तो मांळ  
 पया दुर्गमि ॥ अ धर्म कर्म जना सि ॥ १ ॥ ते निदर्शिता वया कर्मा

कर्मवर्मशुद्धि... तिसुगम ॥ अखंडस्मरावेरामनाम ॥ पुरु  
 षोत्तमशुद्धि... शंकरनामाचागजरा ॥ तेथेकर्मकर्मचेसं  
 भार ॥ जाल निरुरविभस्मसार ॥ ऐसेपवित्रनामहरीचे ॥ ३ ॥ नाम  
 निर्दिष्ट ॥ गणसमस्त ॥ हेसकळशस्त्राचेसंमत ॥ जोविकल्पमा  
 नियेदे ॥ नाजाणनिश्चीतवज्रपाप ॥ वज्रपापाचेप्रवृत्त ॥ निर्दिष्ट  
 श्रीमहाभागवत ॥ तेजनार्दनकृपायेथे ॥ जालोप्राप्तश्रुनायासि  
 ॥ ५ ॥ त्याभाग ॥ ताचापाहाराथ ॥ वरिंलेसेपरमाद्भुत ॥ स्वमुखे  
 तोलिं... पुत ॥ तेप्राकृतविषदेकेले ॥ असेयेथेहिजिवि  
 ... ग्यसंसार ॥ मारुदोषदुखसागरी  
 ... श्रीजनार्दनाचेनिजनाम ॥ नि ॥ ४१ ॥

तेनामसारणेजोनिःकाम ॥ तोपुरुषोत्त  
 स्वयेहोएंब्रह्मपूर्ण ॥ येत्र थिचिंगोडनि  
 रोपण ॥ अठविसावात्र ध्याईजाण ॥ उद्धवासिश्री  
 कृष्णसांगेत ॥ ८५ ॥ तेकथाजेंश्रवणपडे ॥ तेजिविंस्व  
 यंभसखवाढे ॥ भगश्रांतबाहेरीदोंहाकडे ॥ करीवाडे  
 कोडेसा... १० ॥ जेकथेचिंगोडपण ॥ जीउगेल्यानसे  
 ढीजाण ॥ ऐसेरसाळनिरोपण ॥ उद्धवासिश्रीकृष्णसां  
 गेत ॥ ११ ॥ अणेंपजेब्रह्मभावो ॥ तोहाअठविसावा  
 आध्यावो ॥ उद्धवासिदेवाधिदेवो ॥ निजकृपापाहावो

॥४२॥

लागतु ॥१२॥ अक्षरेभ्यो निक्षरासि ॥ ते निरोपणं श्राठा विं  
सावाश्राध्रासि ॥ वक्त्रा जेथे कषी केशि ॥ ब्रह्मसुखेसित  
गडले ॥१३॥ ब्रह्मसुखाचि साठवण ॥ तो हा श्राठा विसावा  
जाण ॥ ते उधडु निउण खुण ॥ उधवासि श्राकृष्णसांगेल ॥  
१४॥ ते कृष्णकवनि जज्ञान ॥ येका विन विजनार्दन ॥ तुम  
आकृपाकं कानि पूर्ण ॥ श्रोता श्रावधानमजद्यावे ॥१५॥  
श्रोतां दीधल्या श्रावधान ॥ ग्रंथी उल्लासे निरोपण ॥ येका  
जनार्दन ॥ रण ॥ सिगी चरण वंदिले ॥१६॥ इति श्रीभागव

तु श्रावधानं ॥ १७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥  
॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥

॥४२॥